अध्याय 36

पवित्रस्थान का निर्माण (भाग 1)

अध्याय 35 में मूसा ने पवित्रस्थान के निर्माण के लिए लोगों को तैयार किया जबकि अध्याय 36 में उसने निर्माण का कार्य आरम्भ किया।

मूसा ने बसलेल, ओहोलीआब, और अन्य बुद्धिमान कारीगरों को जिन्हें पवित्रस्थान के निर्माण के लिए बुलाया गया था, को निर्देश देना समाप्त किया और उन्हें काम पर लगा दिया (36:1, 2)। फ़िर, लेखक इस बात का रिकॉर्ड रखता है कि लोगों ने जो वस्तुएँ दी वे इतनी उदारता से दी कि उन्हें "आगे और अधिक लाने के लिए निर्णायक रुप से रोकना पड़ा" (36:3-7)।

शेष अध्याय पवित्रस्थान अर्थात स्वयं निवास-स्थान के निर्माण का रिकॉर्ड रखता है। पाठ्य निम्नलिखित वस्तुओं के बनाए जाने का वर्णन प्रदान करता है: अन्दर के परदे (36:8-13), बकरी के बाल के परदे और मेढ़ों की खालों का एक ओढ़ना और सूइसों की खालों का एक ओढ़ना (36:14-19), तख्ते (36:20-30), बेंड़ें (36:31-34), दो भागों के बीचवाला परदा (36:35, 36), तम्बू के द्वार के लिये परदा (36:37, 38)।

कारीगरों के काम के लिए बुलाहट (36:1, 2)

[1]"बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमान जिनको यहोवा ने ऐसी बुद्धि और समझ दी हो कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्थान की सेवा के लिये सब प्रकार का काम करना जानें, वे सब यह काम करें।" [2]तब मूसा ने बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमानों को जिनके हृदय में यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया था, अर्थात् जिस जिसको पास आकर काम करने का उत्साह हुआ था उन सभों को बुलवाया।

आयत 1. जहाँ निर्गमन 35 की समाप्ति होती है वहाँ से आगे यह आयत बिना किसी रुकाव के आगे बढ़ती है; आयत 1 को 35:30 के साथ आरम्भ होने वाले अनुच्छेद के समाप्ति होने वाले वाक्य के रुप में देखा जाए।[1] ये वे शब्द हैं जो मूसा ने मण्डली के लोगों को बताते हुए कहे कि पवित्रस्थान का निर्माण कौन करेंगे -

बसलेल और ओहोलीआब, जिनके सहायक **सब बुद्धिमान** लोग होंगे। पिछली आयतों (35:30-35) ने यह संकेत दिया है कि काम में अगुवाई *कौन* करेंगे और यह वर्णन किया गया है कि वे इस काम को करने के लिए निपुण क्यों किए गए हैं: जिस बुद्धि की आवश्यकता है वह परमेश्वर ने उन्हें प्रदान की है। इस अध्याय की प्रथम आयत यह बताती है कि उन्हें *क्या* करना है: उन्हें **यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार** पवित्रस्थान का निर्माण करना है जिसमें उन्हें परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना है। पवित्रस्थान के निर्माण के पूरे विवरण में इस सच्चाई पर बल दिया गया है कि पवित्रस्थान का निर्माण परमेश्वर की ओर से किया जाने वाला कार्य था और इसका निर्माण ठीक उसी प्रकार से किया जाना था जिस प्रकार परमेश्वर ने निर्देश दिए थे।

आयत 2. मूसा ने जो कुछ किया उसे स्मरण करने के साथ ही यहाँ पर बताए जाने वाले विवरण में एक परिवर्तन आता है। निर्माण कार्य का निरीक्षण करने के लिए जिन लोगों का चुनाव परमेश्वर ने किया है उन लोगों के बारे में मण्डली को बताने के बाद, मूसा ने उन लोगों को **बुलवाया** जिन्हें यह काम करना था। अन्य शब्दों में उसने औपचारिक रुप से उन लोगों को काम के लिए नियुक्त किया; उसने उन्हें कार्य पर लगा दिया।[2]

भरपूर भेंटें (36:3-7)

[3]और इस्राएली जो जो भेंट पवित्रस्थान की सेवा के काम और उसके बनाने के लिये ले आए थे, उन्हें उन पुरुषों ने मूसा के हाथ से ले लिया। तब भी लोग प्रति भोर को उसके पास भेंट अपनी इच्छा से लाते रहे; [4]और जितने बुद्धिमान पवित्रस्थान का काम करते थे वे सब अपना अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए, [5]और कहने लगे, "जिस काम को करने की आज्ञा यहोवा ने दी है उसके लिये जितना चाहिये उससे अधिक वे ले आए हैं।" [6]तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार करवाया, "क्या पुरुष, क्या स्त्री, कोई पवित्रस्थान के लिये और भेंट न लाए।" इस प्रकार लोग और भेंट लाने से रोके गए; [7]क्योंकि सब काम बनाने के लिये जितना सामान आवश्यक था, उससे अधिक बनाने वालों के पास आ चुका था।

आयत 3. कारीगरों की एक ज़िम्मेदारी यह थी कि वे लोगों से **भेंटों** को प्राप्त करें जिससे निर्माण के काम के लिए सामग्री हो। लोगों से जिस प्रकार कहा गया उसके अनुसार वे उपहार लेकर आए। **प्रति भोर को वे अपनी इच्छा से भेंटें** लेकर आए। ऊपरी तौर पर भेंटें स्वीकार करने में ही कारीगरों का इतना समय व्यय होने लगा कि निर्माण के लिए उनके पास समय ही नहीं बचा।

आयतें 4-7. परिणामस्वरूप उन्होंने **मूसा** से आग्रह किया कि वह इस परिस्थिति के लिए कुछ करे। उन्होंने समझाया कि काम करने के लिए उनके पास **पर्याप्त से अधिक** हो गया है। वचन यह बताता है कि मूसा ने सारी छावनी **में इस**

आज्ञा का प्रचार करवाया और **इस प्रकार लोग और भेंट लाने से रोके गए।**

आधुनिक पाठकों को यह घटना अद्‌भुत लगेगी जिनसे यह कहा जाता है कि वे कलीसिया के लिए अथवा विभिन्न कारणों से अधिक-से-अधिक दें। यह कल्पना करना कठिन है कि परमेश्वर का सेवक लोगों को *आज्ञा* दे रहा है कि वे *और अधिक न लाएँ* क्योंकि वे पूर्व में ही पर्याप्त से अधिक दे चुके हैं। यह रिकॉर्ड इस्राएलियों के इतिहास में इस बिन्दु पर उनके कृतज्ञ, आज्ञाकारी हृदयों को प्रकट करता है।

निवास-स्थान (36:8-38)

निर्माण का विवरण 36:8 से आरम्भ होता है और 38:23 तक चलता है। इस निर्माण में प्रयोग में ली गई सामग्री का मूल्य 38:24-31 में आँका गया। अध्याय 39 याजकीय वस्त्रों को बनाने के बारे में बताने के द्वारा निर्माण की कहानी को जारी रखता है; फ़िर सम्पूर्ण परियोजना के पूरे होने की घोषणा 39:32 में दी गई। 35:1-36:7 में दिया गया विवरण, 36:8 के आरम्भ में बतायी गई कहानी के परिचय के रुप में कार्य करता है। वास्तव में निर्गमन 25-31 और 35:1-36:7 में पायी जाने वाली सम्पूर्ण जानकारी को पवित्रस्थान के निर्माण के लिए तैयारी के रूप में देखा जाए जिसका आरम्भ में होता है 36:8।

पवित्रस्थान का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

चार ओढ़ने (36:8-19)

8काम करनेवाले जितने बुद्धिमान थे उन्होंने निवास के लिये बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के दस परदों को काढ़े

हुए करूबों सहित बनाया। [9]एक एक परदे की लम्बाई अट्ठाइस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई; सब परदे एक ही नाप के बने। [10]उसने पाँच परदे एक दूसरे से जोड़ दिए, और फिर दूसरे पाँच परदे भी एक दूसरे से जोड़ दिए। [11]और जहाँ ये परदे जोड़े गए वहाँ की दोनों छोरों पर उसने नीले नीले फन्दे लगाए। [12]उसने दोनों छोरों में पचास पचास फन्दे इस प्रकार लगाए कि वे एक दूसरे के सामने थे। [13]और उसने सोने के पचास अंकड़े बनाए, और उनके द्वारा परदों को एक दूसरे से ऐसा जोड़ा कि निवास मिलकर एक हो गया। [14]फिर निवास के ऊपर के तम्बू के लिये उसने बकरी के बाल के ग्यारह परदे बनाए। [15]एक एक परदे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई; और ग्यारहों परदे एक ही नाप के थे। [16]इनमें से उसने पाँच परदे अलग और छ: परदे अलग जोड़ दिए। [17]और जहाँ दोनों जोड़े गए वहाँ की छोरों में उसने पचास पचास फन्दे लगाए। [18]और उसने तम्बू के जोड़ने के लिये पीतल के पचास अंकड़े भी बनाए जिससे वह एक हो जाए। [19]और उसने तम्बू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का एक ओढ़ना और उसके ऊपर के लिये सूइसों की खालों का भी एक ओढ़ना बनाया।

पवित्रस्थान के निर्माण का रिकॉर्ड अध्याय 25 से 31 में दिए गए निर्देशों के क्रम में नहीं है। जहाँ पर पवित्रस्थान के सजावट की वस्तुओं के साथ निर्देश आरम्भ होते हैं वहीं निर्माण का रिकॉर्ड पवित्रस्थान के साथ आरम्भ होता है - अर्थात वह निवास-स्थान जिसमें सजावट का काम किया जाना था। निर्माण के कार्य ने विस्तार के साथ निर्देशों का पालन किया (26:1-14 पर टिप्पणियाँ देखें)।

आयतें 8-19. वह व्यक्ति जिसे निर्गमन के इस सम्पूर्ण भाग में **पवित्रस्थान** के निर्माण का श्रेय प्राप्त हुआ वह व्यक्ति **बसलेल** है। उसने निर्माण के निरीक्षक और परियोजना के मुख्य कारीगर के रुप में कार्य किया। वह विवरण जो अपरिवर्तनीय रुप से ऐसा बताता है कि **उसने बनाया** अथवा इसके समान अर्थ के शब्दों का प्रयोग करता है तो इसका अर्थ यह है कि यह बसलेल की ओर संकेत कर रहा है। 37:1 में उसके नाम के साथ उसके बारे फ़िर से बताया गया है, और सर्वनाम "वह" - बसलेल की ओर संकेत करते हुए - 38:20 में कार्य की समाप्ति तक वाक्यों की विषय-वस्तु के रुप में निरन्तर जारी रहता है। जब तक 39:1 नहीं आ जाता तब तक ,जिन लोगों ने पवित्रस्थान और उसकी सजावट की वस्तुएँ तैयार की उनके बारे में बताने के लिए पाठ्य "उन्होंने" शब्द का प्रयोग कर्ता के रुप में करता है।

यह पद इस प्रकार कहते हुए आरम्भ होता है कि बसलेल ने **परदे** तैयार किए। स्वयं पवित्रस्थान एक निवास-स्थान था और यह एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने योग्य एक पवित्रस्थान था जो विभिन्न सामग्री के चार ओढ़नो के साथ था जो तख्तों के ढाँचे से ढका हुआ था। आन्तरिक ढकाव विभिन्न सामग्री में काढ़े हुए **करूबों** के साथ अनेक रंगों की **बटी हुई सूक्ष्म सनी** से बनाया गया (36:8)। निवास के ऊपर का तम्बू **बकरी के बालों** से बनाया गया (36:14)। दो आन्तरिक ओढ़नो पर एक-एक परदे की सिलाई कर दो बडे ओढ़ने बनाए गए जिन्हें **अंकड़ों** और **फ़न्दों** के द्वारा जोड़ा गया। ये दोनों ओढ़ने **मेढ़ों की खालों और सूइसों की खालों** के ओढ़नों

के द्वारा ढके गए (36:19)।

दीवारें: तख्ते और बेंड़ें (36:20-34)

[20]फिर उसने निवास के लिये बबूल की लकड़ी के तख़्तों को खड़े रहने के लिये बनाया। [21]एक एक तख़्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई। [22]एक एक तख़्ते में एक दूसरे से जोड़ी हुई दो दो चूलें बनीं, निवास के सब तख़्तों को उसने इसी भाँति बनाया। [23]उसने निवास के लिये तख़्तों को इसी रीति से बनाया कि दक्षिण की ओर बीस तख़्ते लगे; [24]और इन बीसों तख़्तों के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ, अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे उसकी दो चूलों के लिये उसने दो कुर्सियाँ बनाईं। [25]और निवास की दूसरी ओर, अर्थात् उत्तर की ओर के लिये भी उसने बीस तख़्ते बनाए; [26]और इनके लिये भी उसने चाँदी की चालीस कुर्सियाँ, अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सियाँ बनाईं। [27]और निवास की पिछली ओर, अर्थात् पश्चिम की ओर के लिये उसने छः तख़्ते बनाए; [28]और पिछले भाग में निवास के कोनों के लिये उसने दो तख़्ते बनाए। [29]वे नीचे से दो दो भाग के बनें, और दोनों भाग ऊपर के सिरे तक एक एक कड़े में मिलाए गए; उसने उन दोनों तख़्तों का आकार ऐसा ही बनाया। [30]इस प्रकार आठ तख़्ते हुए, और उनकी चाँदी की सोलह कुर्सियाँ हुईं; अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सियाँ हुईं। [31]फिर उसने बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनाए, अर्थात् निवास की एक ओर के तख़्तों के लिये पाँच बेंड़े, [32]और निवास की दूसरी ओर के तख़्तों के लिये पाँच बेंड़े, और निवास का जो किनारा पश्चिम की ओर पिछले भाग में था उसके लिये भी पाँच बेंड़े, बनाए। [33]और उसने बीचवाले बेंड़े को तख़्तों के मध्य में तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचने के लिये बनाया। [34]और तख़्तों को उसने सोने से मढ़ा, और बेंड़ों के घर का काम देनेवाले कड़ों को सोने के बनाया, और बेंड़ों को भी सोने से मढ़ा।

आयतें 20-34. पवित्रस्थान के निर्माण का विवरण ओढ़नों से **तख़्तों** और **बेंड़ों** की ओर बढ़ता है जो निवास-स्थान का ढाँचा तैयार करते थे। 36:20-34 में उनके निर्माण का रिकॉर्ड 26:15-29 में दिए गए निर्देशों के साथ निकटता से सम्बन्ध रखता है। ओढ़नों को **बबूल की लकड़ी** (36:20) के लम्ब रुप में खड़े तख्तों के ढाँचों के ऊपर रखा गया और तख़्तों को **सोने** (36:34) से मढ़ा गया। **चूलों** और **चाँदी की कुर्सियों** के द्वारा तख्तों को खड़ा रखा गया। उन्हें पाँच समतल पड़े हुए बेड़ों से एक-साथ खड़ा रखा गया जो **सोने** से मढ़े हुए थे (36:34)। **बीचवाले बेंड़े को तख़्तों के मध्य में तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचने के लिये बनाया** गया (36:33)।

परदा (Veil) और परदा (Screen) (36:35-38)

[35]फिर उसने नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का बीचवाला परदा बनाया; वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों

के साथ बना। 36उसने उसके लिये बबूल के चार खम्भे बनाए, और उनको सोने से मढ़ा; उनकी घुंडियाँ सोने की बनीं, और उसने उनके लिये चाँदी की चार कुर्सियाँ ढालीं। 37उसने तम्बू के द्वार के लिये भी नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ परदा बनाया; 38और उसने घुंडियों समेत उसके पाँच खम्भे भी बनाए, और उनके सिरों और जोड़ने की छड़ों को सोने से मढ़ा, और उनकी पाँच कुर्सियाँ पीतल की बनाईं।

आयतें 35-38. दो कक्षों को विभाजित करने वाले **परदे** और **निवास-स्थान** में प्रवेश के रूप में कार्य करने के लिए बनाए गए **परदे** के साथ ही यह अध्याय समाप्त होता है। दोनों प्रकार के परदों के निर्माण की कहानी 26:31-37 में दिए गए निर्देशों के साथ समान अन्तर में चलती है, मात्र इस बात को छोड़कर कि यहाँ पर जो निर्देश देखने को मिलते हैं वे परदे की कार्यविधि और महत्व के बारे में बताते हैं: यह अति पवित्रस्थान सीमा के बारे में बताता था।

अनुप्रयोग

कार्य के लिए योजना बनाएँ और योजना पर कार्य करें (अध्याय 25-31; 36-40)

जिस किसी ने ऐसा कहा है, "कार्य के लिए योजना बनाएँ और योजना पर कार्य करें," उसने यह विचार निर्गमन की पुस्तक से लिया होगा। अध्याय 25 से 31 तक परमेश्वर ने योजना प्रदान की; उसने कार्य के लिए योजना तैयार की। अध्याय 36 से 40 तक इस्राएलियों ने योजना के अनुसार कार्य किया। परमेश्वर ने अपना घर जिस क्रम के अनुसार व्यावसायिक तरीके बनवाया उसके बारे में यहाँ पर दिया गया पाठ्य बताता है। जिस प्रकार यह निर्माण एक व्यवस्था के अनुसार किया गया इससे सम्भावित रूप से परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग एक पाठ सीखें। ऐसा हो सकता है कि कलीसियाएँ बिना किसी संगठन के एक संस्था के रुप में अस्तित्व में हो। हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि यह धर्मशास्त्र पर आधारित है कि योजनाएँ बनाने में और उन पर कार्य करने के लिए और क्रम के अनुसार कलीसिया के विषयों को देखने के लिए हम संगठित हो जाएँ। साथ ही हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है हम आत्माएँ बचाने के कार्य में हैं न कि धन की बचत करने में अथवा इमारतों के रख-रखाव के कार्य में हैं।

साक्ष्य यह सुझाते हैं कि यीशु ने पृथ्वी पर अपना मिशन एक व्यवस्था के अनुसार आयोजित किया, साथ ही रोमी जगत में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए पौलुस के पास एक निश्चित मिशन रणनीति थी, और साथ ही आरम्भिक कलीसियाएँ (जैसे कि यरूशलेम और अन्ताकिया की कलीसियाएँ) एक क्रमबद्ध रीति से कार्य करती चली गई। इसी प्रकार व्यक्तिगत कार्यकर्ता और मण्डली के रुप में हमें "कार्य के लिए योजना बनाने और योजना पर कार्य करने" का प्रयास करना चाहिए - जिसमें अपने कार्य की ओर आगे बढ़ने के समय हम क्रम के अनुसार और

व्यवस्थित रुप से आगे बढ़ सकें।

प्रभु की कलीसिया का निर्माण करना (35:1-36:7)

मसीही लोग प्रभु की कलीसिया अर्थात परमेश्वर की कलीसिया का निर्माण निरन्तर कर रहे हैं - वे नए क्षेत्रों में आरम्भ से इसका निर्माण कर रहे हैं और फ़िर संख्या और आत्मिकता में इसका निर्माण कर रहे हैं। प्रभु की कलीसिया का निर्माण करने के लिए हम सफ़लता के साथ किस प्रकार सहायता दे सकते हैं? 1 कुरिन्थियों 3:9, 10 में पौलुस ने हमसे कहा कि हम बुद्धिमान राज मिस्त्री के समान बनें। यदि हम पवित्रस्थान के निर्माण में इस्राएलियों के द्वारा किए गए निर्माण कार्य के उदाहरण को देखते हैं तो हम बुद्धिमान हो जाएँगे। उन्होंने यह कार्य किस प्रकार किया?

पवित्रस्थान के निर्माण का विवरण इसके निर्माण में इस्राएलियों के द्वारा स्वयं के गुणों और योग्यताओं के प्रयोग पर बल देता है। यहाँ पाठ्य इस बिन्दु की ओर संकेत करता है कि पवित्रस्थान के लिए लायी जाने वाली कुछ भेंटों में, "बुद्धि का प्रकाश पायी हुई स्त्रियों" (35:25) अथवा "बुद्धि का प्रकाश पायी हुई वे स्त्रियाँ जिन्होंने अपने हृदय में प्रेरणा पायी थी" (35:26) उनके द्वारा बनाए हुए वस्त्र शामिल थे।

यह पाठ्य इस सत्य को भी सम्मुख लाता है कि पवित्रस्थान का वास्तविक निर्माण लोगों के द्वारा किया गया जिन्होंने उस उद्देश्य के लिए अपने विशेष गुणों का प्रयोग किया। परमेश्वर ने मूसा से यह कहते हुए कि उसने बसलेल को "परमेश्वर के आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाला आत्मा है, परिपूर्ण किया है" (31:3) कहा कि उसने बसलेल को बुलाया है कि वह उसे पवित्रस्थान के वास्तविक निर्माण की ज़िम्मेदारी दे। साथ ही परमेश्वर ने ओहोलीआब और अन्य जितने बुद्धिमान हैं उन्हें आवश्यक बुद्धि देकर बुलाया कि वे निर्माण में सहायता दें (31:6)। निर्गमन 35 में बसलेल और अन्य कारीगरों को कार्य के लिए वास्तविक रूप से नियुक्त किया गया। फ़िर से मूसा ने इस बात पर बल दिया कि यह परमेश्वर है जिसने बसलेल और उसके सहयोगियों को बुलाया और उन्हें आवश्यक बुद्धि से भरा (35:30-35)। निर्गमन 36:1 में हम पढ़ते हैं,

> [मूसा ने कहा,] "बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमान जिनको यहोवा ने ऐसी बुद्धि और समझ दी हो कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्थान की सेवा के लिये सब प्रकार का काम करना जानें, वे सब यह काम करें" (देखें 36:2)।

पवित्रस्थान के निर्माण में यह पुस्तक बसलेल को निरन्तर श्रेय देती चली जाती है (38:22)।

पवित्रस्थान के निर्माण में जिन भेंटों का प्रयोग किया गया उनके बारे में तीन सच्चाइयाँ हमारे ध्यान में आती हैं।

जो गुण इन स्त्रियों और पुरुषों के पास थे वे उन्हें परमेश्वर से प्राप्त हुए। किस

प्रकार के दान इस कार्य में शामिल थे? इनके वरदान ये नहीं थे कि वे भविष्यद्वक्ता बन गए और परमेश्वर के शब्द अच्छी प्रकार से बोल सकते थे। ये वे गुण थे जिनकी आवश्यकता *निर्माण* के कार्य के लिए थी: कारीगरी की युक्तियाँ निकालने से सम्बन्धित गुण, जड़ने के लिये मणि काटने और लकड़ी पर नक्काशी करने, अन्य प्रकार के नक्काशी के कार्य, बेल-बूटे काढ़ने के कार्य और सूत कातने के कार्य से सम्बन्धित गुण। हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि हमारी सब योग्यताएँ, चाहे वे किसी भी प्रकार के गुण क्यों न हों वे सब परमेश्वर से हमें प्राप्त होते हैं। वह मात्र प्रचार करने का अथवा शिक्षा देने अथवा गीतों में अगुवाई देने का अथवा अगुवाई के गुण ही नहीं देता; वह मसीही लोगों को बढ़ई, विद्युतकर्मी, नलकर्मी और दर्जी के रूप में अपना काम करने के लिए भी गुण देता है। अगर आप कार की मरम्मत कर सकते हैं, एक टूटी हुई टोंटी को ठीक कर सकते हैं, अथवा कम्प्यूटर की मरम्मत कर सकते हैं तो इसका अर्थ यह है कि वह गुण आपको परमेश्वर से प्राप्त हुआ है।

ये लोग परमेश्वर की सेवा में अपने गुणों का प्रयोग करने के लिए तैयार थे। बाइबल उनकी इच्छा पर बल नहीं देती परन्तु दिए गए पाठ्य में यह सुझाव नहीं दिया गया कि परमेश्वर ने उन्हें इस काम में स्वयं को और अपने गुणों को समर्पित करने के लिए बाध्य किया। परमेश्वर ने उन्हें बुलाया और वे उसकी बुलाहट का प्रत्युत्तर देने के लिए तैयार थे।

जिन लोगों के पास वरदान थे वे उनका प्रयोग करने के लिए अपना समय देने के लिए तैयार थे। एक अर्थ में पवित्रस्थान का निर्माण करने के लिए तीन प्रकार की भेंटों की आवश्यकता थी: धन, गुण और समय रुपी भेंटें। वरदान पाए हुए लोग पवित्रस्थान के निर्माण में अपने जीवन के छः महीनों से भी अधिक समय का निवेश करने के लिए तैयार थे। इस परियोजना पर एक सप्ताह में छः दिन अनेक महीनों तक उन्होंने निरन्तर काम किया। जब तक उन्होंने इसे पूरा नहीं कर लिया तब तक वे इसी काम में लगे रहे।

वर्तमान में कलीसिया को किस वस्तु की आवश्यकता है? अधिक धन की? सामान्य रुप से कहा जाए तो जितनी आवश्यकता है उतना पर्याप्त धन इसके सदस्यों के पास है परन्तु सम्भावित रुप से उन्हें और भी उदार दानदाता बनना होगा। क्या उन्हें अधिक गुणों की आवश्यकता है? नियम के अनुसार लगभग किसी भी मण्डली की सदस्यता में बहुतायत से गुण देखे जा सकते हैं जिससे परमेश्वर जो कुछ करने की अपेक्षा रखता है उसे पूरा करने के लिए कलीसिया को योग्य बनाया जा सके। किसी भी अन्य बात को छोड़कर कलीसिया को लगभग सब स्थानों में जिसकी आवश्यकता है वह है *समय* - जिसका निवेश परमेश्वर के काम में करने के लिए सदस्य तैयार रहें। वे गुण किस काम के कि जिसके पास वे हों और वे परमेश्वर की सेवा में उनका प्रयोग करने के लिए स्वेच्छा से समय देने के लिए तैयार न हों? परमेश्वर की सेवा करने के लिए हमें अपने समय का प्रयोग करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है - बाइबल का अध्ययन करना, प्रार्थना करना, कलीसिया की सेवाओं में परमेश्वर की आराधना करना, बीमारों से भेंट करने के लिए जाना, अपने पड़ोसियों की सहायता करना, कलीसिया की गतिविधियों में शामिल होना,

मसीह के बारे में अपने मित्रों को बताना और मिशन कार्य करना-ऐसे कार्य हैं जिनमें समय देने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार परमेश्वर चाहता है उस प्रकार कलीसिया बन सके इसके लिए आवश्यक है कि इसके सदस्य कार्य विशेष के लिए अपने गुण, समय और धन दे। अगर वे तैयार हैं तो जहाँ कहीं पर हम जाएँ वहाँ पर कलीसिया का निर्माण किया जा सकता है, और उसी प्रकार पवित्रस्थान का निर्माण भी किया गया। तब परमेश्वर वर्तमान में प्रसन्न होगा जिस प्रकार वह उस समय प्रसन्न हुआ था।

परमेश्वर लोगों को गुण देता है (36:1)

पवित्रस्थान के निर्माण के लिए जिन गुणों का प्रयोग किया गया वे परमेश्वर की ओर से दिए हुए गुण थे। उसी प्रकार वर्तमान में हमारे पास जितनी भी योग्यता और गुण हैं वे हमें परमेश्वर से प्राप्त हुए हैं: "क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है" (याकूब 1:17)। हमें अपने गुणों अथवा योग्यताओं के लिए श्रेय प्राप्त करने का प्रयास नहीं करना चाहिए परन्तु सारा श्रेय परमेश्वर को देना चाहिए। उसने हमें वे गुण दिए इसके लिए हमें उसकी प्रशंसा करनी चाहिए और परमेश्वर के राज्य में उसकी महिमा के लिए इनका प्रयोग करना चाहिए।

समाप्ति नोट्स

[1]NASB यह संकेत देती है कि आयत 2 के साथ ही नया अनुच्छेद आरम्भ हो रहा है और यह सुझाव देती है कि आयत 1 पिछले अनुच्छेद का एक भाग है। [2]इसी प्रकार की कार्यविधि का प्रयोग नया नियम में किया गया है। परमेश्वर ने एक कार्य के लिए लोगों को सौभाग्य के साथ तैयार किया और उनका चुनाव किया - जहाँ पर और कुछ मामलों ने उसने उनके गुणों के बारे में बताने के द्वारा ऐसा किया। तब वे कार्य के लिए औपचारिक रुप से "नियुक्त" किए गए अथवा स्थापित किए गए। भोजन का वितरण करने के लिए सात पुरुषों के चुनाव (प्रेरितों 6:1-6) और अपने मिशनरी कार्य के लिए पौलुस और बरनबास के चुनाव (प्रेरितों 13:1-3) के बीच तुलना करें।